Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

भीष्म साहनी के साहित्य में नारी-चेतना: राष्ट्रीय सन्दर्भ

Promila[1]* Dr. Govind Dwivedi[2]

[1] PhD Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Research Director, Assistant Professor, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार - ***नारी प्रकृति रूपा है, प्रकृति परमपुरुष की इच्छा का प्रतिफलन है।प्रसिद्ध है कि जगन्नियता को जब एकाकी रमने में कुछ ऊब सी हुई तो वे स्वकीयइच्छा-शक्ति से एक से दो हो गए। उस तरह से प्रकृति की सुरुचिपूर्ण रमण सृष्टिहै। वह पुरुष की पूरक है। उसे आदिकाल से ही समस्त सृष्टि की संचालिकाशक्ति माना जाता है। नारी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। नारीके संयोग से ही संसार आगे बढ़ता है।***

----------X----------

1. राष्ट्र का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप:

'राष्ट्र' शब्द का अर्थ है, 'रासन्ते चारू शब्द कुर्वते जनः यस्मिन् प्रदेश विशेष तद् राष्ट्रम्' अर्थात् जिस प्रदेश के लोग विशिष्ट भाषा द्वारा विचार-विनिमय करतें है वह स्थान विशेष राष्ट्र है।

मानक हिन्दी कोशकार ने राष्ट्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है, 'किसी निश्चित और एक शासन में रहने वाले लोगों का समूह।'1

'युजर्वेद में राष्ट्र शब्द का उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है। यथा 'राष्ट्र मेहेदि' तथा राष्ट्रदा राष्ट्रम्भे दत।'2

'ऐतरेय ब्राह्मण' में प्रजा को ही राष्ट्र की संज्ञा दी गई है।'3

अनेक स्थानों पर पशु, धन-धान्य आदि सम्पदाओं से सुशोभित भूमि-भाग को राष्ट्र कहा गया है। वस्तुतः अनेक ग्रन्थों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि भाषा, भूमि, जन समुदाय आदि विभिन्न अर्थों में राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया जाता है।

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से 'राष्ट्र' की परिभाषा दी है। जो इस प्रकार से है-

1. माखन लाल चतुर्वेदी के अनुसार, हिमालय से लगातार समुद्र पर्यन्त के भू-भाग तथा हिमालय की एकता के प्रसार स्थल को राष्ट्र माना है।4
2. डॉ. देवराज पथिक के अनुसार, 'जब राष्ट्रीयता राजनीतिक एकता तथा स्वतंत्राता प्राप्त कर लेती है, तो वह राष्ट्र कहलाने लगती है।5
3. एन्साईक्लोपीडिया ऑफ़ अमेरिका में राष्ट्र शब्द की परिभाषा इस प्रकार है-'राष्ट्र व्यक्तियों का वह समूह है जो राजनीतिक, जातीय, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से आबद्ध हो। उनका सद्गम एक हो, उनमें एक साथ रहने एवं कार्य करने की उत्कट भावना है।'6
4. बर्गेस ने राष्ट्र के विषय में लिखा है-'एक जन समुदाय जिसकी भाषा एवं साहित्य, रीति-रिवाज तथा भले-बुरे की चेतना सामान्य हो और जो भौगोलिक एकता युक्त प्रदेश में रहता हो राष्ट्र कहलाता है।'7

जब व्यक्ति मात्र स्वयं को ही नहीं देखता बल्कि अपने कार्यों का मूल्यांकन राष्ट्रहित के संदर्भ में भी करता है तो उसकी भावनाएँ विस्तृत हो जाती है। वह राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने के लिए तत्पर हो जाता है। यही 'देने के भाव' राष्ट्रीयता की भावना को जन्म देता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी राष्ट्रीयता की परिभाषा देते हुए कहते हैं, 'राष्ट्रीयता का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का अंश है और उस राष्ट्र की सेवा के लिए, उसे ध्न-धन्य से समृद्ध बनाने के लिए, उसके प्रत्येक नागरिक को सुखी और सम्पन्न बनाने

www.ignited.in

के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सब प्रकार के त्याग और कष्ट स्वीकार करना चाहिए।'8

2. राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका:

राष्ट्र-निर्माण में महिलाओं के योगदान की बहुत आवश्यकता है। उनकी उपेक्षा से समाज समुन्नत नहीं हो सकता, सम्मान नहीं पा सकता। स्वामी विवेकानंद जी ने भी उचित ही कहा था कि 'औरतों की स्थिति में सुधार लाए बिना दुनियां का कल्याण सम्भव नहीं है।'

अटल बिहारी वाजपेयी जी का नारी के प्रति विचार है कि, 'महिलाएँ केवल बेटियाँ, पत्नियाँ या माताएँ ही नहीं बल्कि वे इस लोकतंत्र की जिम्मेदार नागरिक भी है। राष्ट्र की महानता में उनके योगदान को कभी सही तरीके से स्वीकार नहीं किया गया। महिलाओं के लिए एक संवैधानिक आयोग बनाने की जरूरत है जो इस उपेक्षित वर्ग की समस्याओं पर ध्यान दे और उन्हें बराबरी का दर्जा देने के सुझाव दे ताकि वे देश की प्रगति में प्रभावी योगदान दे सके।'9

साहनी जी के साहित्य में वर्णन मिलता है कि नारी का राष्ट्र निर्माण मंे अपना योगदान है। वह किसी न किसी रूप में राष्ट्र से जुड़ी रहती है। 'वाघ्चू' की पंक्तियां हैं, 'सुनो, वाघ्चू, भारत और चीन के बीच बंद दरवाजे अब खुल रहे हैं। अब दोनों देशों के बीच सम्पर्क स्थापित हो रहे हैं और इसका बड़ा महत्त्व है। अध्ययन का यही काम जो तुम अभी तक अलग-अलग करते रहे हों, वही अब तुम अपने देश के मान्य प्रतिनिधि के रूप में कर सकते हो।'10

'ओ हरामजादे' कहानी में भी हेलन विदेशी होने पर भी भारत के प्रति अपनी भावनाओं को प्रकट करती है। वह स्वयं को भारतीय नारी बनाना चाहती है। 'शादी के कुछ समय बाद ही वह मेरे मुंह से सुने गीत-टप्पे भी गुनगुनाने लगी थी। कभी-कभी सलवार-कमीज पहनकर मेरे साथ घूमने निकल पड़ती। रसोईघर की दीवार पर उसने भारत का एक मानचित्रा टांग दिया था, जिस पर अनेक स्थानों पर लाल पैंसिल से निशान लगा रखे थे कि जालंधर कहाँ पर है और दिल्ली कहाँ है और अमृतसर कहाँ है।'11 नारी भी इस प्रकार राष्ट्र-निर्माण में अपनी भूमिका को दर्शाती है। 'घर की इज्जत' में भी राष्ट्र में नारी के योगदान को महत्वपूर्ण माना गया है-'हमारे नाटक हमारे देश के इतिहास और संस्कृति का एक गौरवमय अंग है। मुझे खुशी है कि इस कार्य में हमारी बालिकाओं और स्त्रियों ने भाग लिया है। देश की कला देश की स्त्री जाति पर अवलम्बित है। उनका भाग लेना कला के लिए मंगलकारी है।

'मैंने सोच लिया है। शायद पहले मैं न भी खेलती। पर अब भारतीय नारी और भारतीय संस्कृति की प्रशंसा के बाद तो जरूर खेलूंगी।'12

राष्ट्र निर्माण में नारियों का महत्वपूर्ण योगदान है। 'मेड इन इटली' में मीरा से दुकानदार कहता है, 'सच पूछे मदाम, तो दुनिया की खूबसूरती में आधा भाग स्त्रियों की खूबसूरती का होता है और इसमें भी 90 फीसदी हिन्दुस्तानी औरतों की खूबसूरती का।'13 'तमस' उपन्यास की लीजा भी देश में शांति चाहती है। वह चाहती है कि सभी प्रेम प्यार से रहें। पंक्तियाँ इस प्रकार है-

'धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं, देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं।' रिचर्ड ने मुस्कराकर कहा-'बहुत चालाक नहीं बनो, रिचर्ड। मैं सब जानती हूँ। देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो। क्यों, ठीक है ना?'

'हम नहीं लड़ाते, लीजा, ये लोग खुद लड़ते हैं।'

'तुम इन्हें लड़ने से रोक भी तो सकते हो। आखिर है तो ये एक ही जाति के लोग।'

'मययादास की माड़ी' में लेखराज को मोरां देश की सेवा के लिए भेजती है। वह भावुक होती है परन्तु हौंसला रखती है। 'लेखराज को इस बात की अपेक्षा नहीं थी कि मौरां यो हंसती हुई मिलेगी। वह स्वयं भावुक हो रहा था। फिर मौंरा सहसा चुप हो गयी थी और उसकी आंखें लेखराज के चेहरे पर लग गई थी। फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद धीमी आवाज में बोली थी, 'कब जाएगा? यहाँ से लाहौर जाएगा? तू क्या सचमुच चला जाएगा?'

'हाँ लाहौर जाऊँगा। हम सब लाहौर जाएंगे। वहाँ पर छावनी में, हमारी सिखलाई होगी, वे हमें बंदूकें देंगे और वहाँ से आगे भेजेंगे।'

तू क्यों जाता है लेखराजा, तुझे क्या पड़ी है? कहते हुए, सहसा ही मोरां का स्वर बदल गया था, 'मैं तेरे लिए मन्नत मानूँगी।'14 नारी देश के सर्वस्व कुर्बान करने के लिए भी तैयार रहती है। राष्ट्र के निर्माण में योगदान के लिए नारी का शिक्षित होना भी अति आवश्यक माना गया है। 'मययादास की माड़ी' में इस विषय को लेकर झगड़ा भी होता है। 'पर स्कूल बंद नहीं हुआ। वानप्रस्थी के स्थान पर लेखराज बच्चियों को अक्षर-बोध कराने लगे। अपने फूस के झोंपड़ें में वानप्रस्थी पड़ा था, पर इधर नियमित रूप से

भागसुद्धी भी पहुँच जाती और लेखराज भी और बच्चों की पढ़ाई नियमित चलती रही।?'15

इस प्रकार नारी का राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

3. विश्वबधुत्व एवं नारी:

जब व्यक्ति 'स्व' से 'पर' की ओर उन्मुख हो जाता है, तब वह मात्र अपने बारे में ही नहीं सोचता बल्कि परिवार, देश और समाज के बंधन को छोड़कर सम्पूर्ण विश्व की भलाई की सोचता है और आज के समय में जहाँ मानव आण्विक शक्ति और भौतिकवाद के युग में जी रहा है, वहाँ तो इस विश्व बंधुत्व की भावना का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि इसी भावना के बल पर हम एक-दूसरे का भला कर सकते हैं और अपनी ताकत को मानव कल्याण के लिए लगा सकते हैं। वरना द्वेष भावना के अंतर्गत मनुष्य कभी भी इस संसार को राख का ढेर बना सकता है। भीष्म साहनी जी साहित्य के माध्यम से विश्व को एक बंध्न में बांधना चाहते हैं। 'एम मंच पर मिल बैठने पर भी मात्र एक-दूसरे के नाम से ही परिचित हो पाते हैं। इससे अधिक नहीं, इस दूरी को पाटना अत्यन्त आवश्यक है। हमें सच्चे अर्थों में एक-दूसरे के निकट आना चाहिए, सांस्कृतिक एकबद्धता, राष्ट्रीय एकबद्धता के नाते भी और जागरूक साहित्य कर्म के नाते भी। अनुवाद कार्य की भूमिका प्रमुख है, एक-दूसरे से मिल बैठने, एक-दूसरे के प्रदेश की यात्रा करके, सेमिनारों, गोष्ठियों में विचारों के आदान-प्रदान आदि सभी इस दिशा में सहायक होंगे।'16

नारी में विश्वबंधुत्व की भावना होती है। 'ओ हरामजादे' में नारी विदेशी होती है परन्तु वह भारत का रहन-सहन सीख लेती है। उसकी भावना स्पष्ट नजर आती है-'सलवार कमीज पहने, बालों का जूड़ा बनाए, चूड़ियाँ खनकाती एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती हुई तिलकराज की पत्नी मेरे लिए मेरे वतन का मुजस्समा बन गयी थी। मेरे देश की समूची संस्कृति सिमट आयी थी। मेरे दिल में, कही गहरे में, एक टीस-सी उठी।

'भारत सम्बन्धी जो किताब मिलती, उठा लाती, जब कभी कोई हिन्दुस्तानी मिल जाता उसे आग्रह-अनुरोध करके घर ले आती।'17

विदेशी महिलाओं के लिए भारतीय रीति-रिवाज काफी आकर्षक है। वे इसमें विशेष रूचि लेती हैं। इससे भी विश्वबन्धुत्व को बढ़ावा मिलता है, 'मिसेज स्मिथ जो इस बीच पास खड़ी एक लड़की की छम-छम करती साड़ी और बिन्दियां निहार रही थी, चहककर बोली, 'क्या तुम सच? हाउफ वण्डरफुल! हाउफ एक्जोटिक! मैनें तुमसे कहा था न, हिन्दुस्तानियों के रिवाज बडे अनुठे होते हैं। फिर सिर हिला-हिलाकर कहने लगी, 'क्या तुम सचमुच उस पर बैठोगे? घोड़ी पर बैठकर तुम कहां जाओगे? क्या रजिस्ट्रेशन के दफतर जाओगे? इस वक्त तो दफतर बंद होगा।'

'नहीं, मैं घोड़ी पर बैठकर लड़की वालों के घर जाउँगा, मेरे सम्बन्धी-साथी मेरे साथ जाऐगें, और लड़की के घर में शादी की रस्म होगी।'

'हाय, हम तुम्हारे ब्याह की रस्म देखना चाहती है। क्या हम तुम्हारे साथ चल सकती हैं?'18

यात्रा के साथ-साथ विदेशों से खरीददारी करके नारी विश्वबंधुत्व का परिचय देती है। 'मेड इन इटली' की पक्तियाँ हैं:-

'मीरा की शापिंग लिस्ट पूरी हो चली थी। लन्दन से मीरा ने उफनी समान खरीदा था, पेरिस से इत्रा और नाइटिज, बर्लिन से ट्रांजिसटर और टेप रिकार्डर। रोम पहुँचते-पहुँचते उसकी सारी खरीददारी लगभग पूरी हो चली थी।'19 'कुंतो' उपन्यास में भी विश्वबन्धुत्व का सन्देश दिया जाता है। जब कुंतो ट्रेन में जा रही होती है तो गीत गुनगुनाया जाता है:-

'सुनो, सुनो!

ये किन बच्चों की चीखें हैं,

किस दुखिया मां की फरियाद लिए खामोश निगाहें हैं?

हम हिन्दु है, हम मुस्लिम हैं,

हम सब गरीब, सब दुखियारे सब एक ही बिपता के मारे,

बन्द करो, बन्द करो यह खून की होली।'20

इससे प्रतीत होता है कि हम सब एक हैं। आपसी ईष्र्या भावना को समाप्त करके प्यार-प्रेम से रहना चाहिए। 'तमस' उपन्यास में लीजा की भावना भी विश्वबन्धुत्व में समाहित हैं। 'जब लीजा भारत आयी थी तो बहुत सी योजनाएं बनाकर कि वह भारत की दस्तकारी के नमूने इक्ट्ठे करेगी, खूब घूमेगी, तस्वीरें उतारेगी, शेर की पीठ पर बैठकर तस्वीरें खिंचवाएगी, साड़ी पहनकर घूमा करेंगी और जाने क्या-क्या।'21

'आज के अतीत' की रफसी महिला को देखकर भी ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण विश्व एक है। उसका व्यवहार अत्याध्कि

www.ignited.in

प्रेरणादायक होता है, 'हम लोग कीव्स्की मेट्रो स्टेशन पर उतरे थे और वहां से पैदल चलते हुए उक्रइना होटल की ओर जा रहे थे जब दूसरी ओर से बड़ी उम्र की एक रूसी महिला को आते देखा। जब वह नजदीक पहुँची तो हमें देखकर रूक गई। 'क्या आप लोग भारत के रहने वाले हैं? उसने रूसी भाषा में पूछा।

मेरे साथियों में से केवल जोए अंसारी ही रूसी भाषा जानता था। उसने जवाब में कहा, 'जी, हम भारत के रहने वाले हैं।' तो उस महिला ने सहसा ही झुककर जमीन को छुआ और बोली, 'आप टैगोर के देश के निवासी हो। आपका स्वागत है।' और मुस्कराती हुई, मानो हमें आशिष देती हुई आगे बढ़ गई।'22

इस प्रकार भीष्म साहनी जी के साहित्य में विश्वबंधुत्व के स्पष्ट उदाहारण मिलते हैं। सम्पूर्ण विश्व के प्रति आत्मीयता के भाव के भी उदाहारण मिलते हैं। नारी सम्पूर्ण विश्व को एक बन्धन में बांधना चाहती है और उसके लिए प्रयास भी करती है।

4. देशभक्ति और नारी:

नारी में विश्वबन्धुत्व की भावना से पहले देशभक्ति की भावना होती है। वह देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने के लिए तत्त्पर रहती है। कहा भी है-जब मानव में अपना सब कुछ बिना किसी स्वार्थ भावना के अपने देश के लिए बलिदान करने का भाव पैदा होता है तो वह देशभक्ति है। देशभक्ति में मानव अपने-अपने का भेदभाव भूल जाता है तथा उस देश के सभी नागरिक उसके अपने सगे-सम्बन्धी हो जाते हैं।

'ओ हरामजादे' की कुछ पंक्तियों से देशभक्ति की भावना स्पष्ट उजागर होती है। 'उसकी आंखों में वही रूमानी किस्म का देशप्रेम झलकने लगा था जो देश के बाहर रहने वाले हिन्दुस्तानी की आंखों में, अपने किसी देशवासी से मिलने पर चमकने लगता है। हिन्दुस्तानी पहले तो अपने देश से भागता है, और बाद में उसी हिन्दुस्तानी के लिए तरसने लगता है।'23

इटली में जब मीरा को दुकानदार धोखा देता है तो तब उसे अपने देश की याद आती है-'मुझे बलदेव ने कहा भी था कि इटली के दुकानदारों की बातों में न आना और इधर मेरी मत मारी गयी। अन्धों की तरह इस फटीचर बैग के लिए पैसे देकर चली आयी।'24 देशभक्ति में देशभक्त अपनी जान तक कुर्बान कर देता है। मरने के बाद भी उसकी आत्मा देश की शान्ति चाहती है। 'भटकती राख' में दादी मां वर्णन करती है-'आज का दिन बड़ा शुभ दिन है। देश में जब सुख-चैन होता है तो राजा की राख के जर्रे चमकने लगते हैं। तब लोग कहते हैं कि राजा की राख मुसकरा रही है, वह खुश है, राजा चैन से है।'

'पर राजा देश में सुख-चैन न हो तो?'

'तो राजा की राख भटकने लगती है। जब देश पर संकट आता है, झोंपड़ी से रोने की आवाजें आती हैं और देश में आंध्यिाँ और तूफान उठते हैं, तो राजा की राख बैचेन हो उठती है और लोगों को लगता है जैसे वह सायं-सायं करती गलियों, सड़कों और राहों पर भटक रही है, झोंपड़ों से लिपट रही है।'25 देशभक्ति की भावना को दादी जी अच्छी तरह से समझती हैं। देशभक्ति की भावना ही ऐसी होती है कि जिन्दगी के चलते अगर मन की इच्छा पूरी न हो तो मरने के बाद भी उसकी आत्मा देश की खुशी चाहती है।

'हानूश' में कात्या में भी देशभक्ति की भावना होती है। वह अपने वतन को, अपने देश को सब कुछ मानती है।

कात्या: नहीं ऐमिल नहीं। मैं कहीं नहीं जाऊंगी। उसे भी कहीं नहीं जाने दूंगी।

एमिल: भले ही यहाँ वह तड़प-तड़प कर मर जाये।

कात्या: मैं उसे मरने नहीं दूंगी। यहां पर हमारा घर है, यह हमारा वतन है। सुख-दुःख में दसियों लोग यहां हमारी मदद करने वाले हैं। अब जो हो गया, सो हो गया।

कात्या: एक दिन तो मरना ही है, आगे क्या और पीछे क्या! परदेश में मरने से अपने घर में मरना अच्छा है।'26

जब हानूश को विदेश में भेजने की बात की जाती है तो कात्या को गुस्सा आ जाता है और उत्तेजित होकर कहती है-'यह बहुत बड़ी तबदीली है, ऐमिल, बुढ़ापे में घर से बेघर होने वाली बात है। अपना देश छोड़कर पर देश में कभी कोई सुखी नहीं हुआ।'27

कात्या के शब्दों से उसकी देशभक्ति प्रकट होती है। उसके लिए सब कुछ वतन में ही है। वह उसको छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहती। अन्तिम क्षण तक अपने वतन में ही रहना चाहती है। इसी प्रकार की भावना 'आज के अतीत' आत्मकथा में दिखायी गयी है। 'ऐसी भावुक वृत्ति हर देश और जाति के लोगों में होती है पर हम हिन्दुस्तानियों में कुछ जरूरत से ज्यादा है। मुझे एक बार यह बरसों बाद की बात है- अफ्रीका में ब्राजील कागो जाने का अवसर मिला। वहाँ पर कुछ भारतीय परिवार रहते थे। एक परिवार ने मुझे और मेरे एक साथी लेखक को खाने पर बुलाया। वहाँ भी मुझे ऐसा ही कुछ देखने को मिला। उस घर की गृहिणी ने खाने से पहले, ग्रामोफोन पर एक रिकार्ड लगा दिया, 'चिट्ठी

आई है।' गीत सुनते हुए वह स्वयं इतनी भावुक हो उठी कि बेकाबू होकर रोने लगी। फिर बीच में से उठकर अन्दर चली गई।

हम हिन्दुस्तानी अपना देश छोड़कर विदेश जाने के लिए भी उतावले होते हैं और बाद में लौटने के लिए भी बैचेन होने लगते है।'28

इस प्रकार भीष्म साहनी के साहित्य में देशभक्ति की भावना उजागर होती है। नारी देशभक्त है। वह अपने देश में, अपने वतन में रहकर ही अत्यन्त खुश है।

इस प्रकार भीष्म साहनी के साहित्य में राजनीतिक चेतना में नारी का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अपितु नारी अंग्रेजी शासन और राजनीति के अपराधीकरण से पीड़ित होती है। परन्तु फिर भी विश्वबंधुत्व और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। राजनीति में भ्रष्ट लोग नारी का भी शोषण करते हैं, उसको प्रताड़ित करते हैं। उसकी बेबसी एवं लाचारी का फायदा उठाया जाता है। प्रशासनिक चेतना में भी नारी को विशेषाधिकार प्राप्त नहीं हैं।

भीष्म साहनी के अपने साहित्य में वर्तमान शासक वर्गीय राजनीति के चरित्र को उघाड़ते हुए जन सामान्य की राजनीति को भी अपने साहित्य में स्थान दिया है। प्रशासन व्यवस्था का चरित्र, चरित्र के माध्यम से राज्य का वर्गीय चरित्र है। मानव-मूल्यों की रक्षा करता हुआ कोई व्यक्ति प्रशासन व्यवस्था में नहीं रह सकता। पूंजीवादी लोकतंत्र में चुनाव-व्यवस्था इतनी मंहगी है कि आम आदमी इस प्रक्रिया में हिस्सा नहीं ले सकता। चुनाव हथकण्डों ने मानवीय संवेदनाओं को नगण्य बना दिया है।

निष्कर्ष:

भीष्म साहनी जी की प्रत्येक रचना में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक स्थिति विद्यमान है। यह राजनीति सामाजिक सम्बन्धें के परिवर्तन की वैचारिक भूमिका बनकर उपस्थित है। उनके आलोचनात्मक विवेक की सामाजिकता में राजनीति भी सूक्ष्म रूप से व्याप्त है। अंग्रेजी शासन से ग्रस्त नारी का साहनी जी ने वर्णन किया है। अंग्रेजी नारी का शोषण करते हैं। चाहे वह शारीरिक शोषण हो या आर्थिक शोषण। नारी उस शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती है तो भारतीय शासन-व्यवस्था में पिसती नजर आती है। शासन व्यवस्था न्यायशील नहीं है, अपितु इतनी असंगत है कि उसमें ऊँच-नीच, छुआछूत, अमीर-गरीब को भी आधर बनाया जाता है। शासन व्यवस्था के साथ-साथ नारी को चुनाव व्यवस्था का भी शिकार होना पड़ता है। उसके पुरुषों के समान अधिकार नहीं दिए जाते। नारी के साथ चाहे कितना भी अन्याय या अत्याचार होता हो परन्तु फिर भी वह देशभक्ति एवं विश्वबन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण होती है। वह निःस्वार्थ भाव से सर्वस्व त्याग के लिए तत्पर रहती है। इस प्रकार राजनीति भी नारी जीवन को अत्याधिक प्रभावित करती है।

संदर्भ सूची:

1. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृ. 505
2. यजुर्वेद, दशम अध्याय, पृ. 213
3. एतरेय ब्राह्मण, अध्याय 40, खण्ड 3/26
4. माखन लाल चतुर्वेदी, साहित्य देवता, पृ. 10
5. डॉ. देवराज पथिक: हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा, पृ. 20
6. एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ अमेरिका, पृ. 749
7. बर्गेस जी॰ए॰, एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ दी सोशियल साईंस, पृ. 32
8. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी: हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, पृ. 247
9. अटल बिहारी वाजपेयी, सं॰ डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, बिन्दु बिन्दु विचार, पृ. 16
10. भीष्म साहनी, वाघ्चू, वाघ्चू, पृ. 103
11. वही, वाघ्चू, ओ हरामजादे, पृ. 24
12. वही, भाग्य रेखा, घर की इज्जत, पृ. 123
13. भीष्म साहनी, शोभायात्रा ;मेड इन इटलीद्ध, पृ. 37
14. वही, मययादास की माड़ी, पृ. 124
15. भीष्म साहनी, मययादास की माड़ी, पृ. 282
16. राजेश्वर ठाकुर, प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, पृ. 47
17. भीष्म साहनी, वाघ्चू, ओ हरामजादे, पृ. 24

www.ignited.in

18. वही, पटरियाँ, ढोलक, पृ. 191

19. भीष्म साहनी, शोभायात्रा, मेड इन इटली, पृ. 35

20. वही, कुंतो, पृ. 80

21. वही, तमस, पृ. 306

22. भीष्म साहनी, आज के अतीत, पृ. 187

23. भीष्म साहनी, वाघचू, ओ हरामजादे, पृ. 13

24. वही, शोभायात्रा, मेड इन इटली, पृ. 39

25. वही, भटकती राख, भटकती राख, पृ. 13-14

26. भीष्म साहनी, हानूश, पृ. 77

27. वही, पृ. 85

28. भीष्म साहनी, आज के अतीत, पृ. 123-124

Corresponding Author

Promila*

PhD Scholar, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan